DSSSB TGT & PGT
दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
ROJGAR With ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
संज्ञा प्रकरण
Part-04
LIVE 15-03-2024 05:00 PM

1. संयोग
2. वृद्धि
3. गुण
3. सत्
4. निरोठा
5. च्च
6. उपधा
7. टि
8. प्रागल्ल

नदी संज्ञा :- यू स्त्र्याख्यौ नदी

ई, ऊ ईकारान्त और ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों की नदी संज्ञा होती है।

उदा० - गौरी, वधू

नदी संज्ञा

DSSSB TGT & PGT संस्कृत SCHOLAR BATCH

घि संज्ञा

शेषो घ्यसखि

इकारान्त और उकारान्त शब्द जो पुल्लिङ् नपुंसकलिङ् के हों उनकी घि संज्ञा होती है।

उदा० - हरि, साधु, मधु

घि संज्ञा

सर्वनामसंज्ञा

सर्वादीनि सर्वनामानि

सूत्रार्थ सर्व, विश्व, यत्, तद्, एतत्, इदम्, अदस्, अस्मद्, युष्मद् आदि शब्दों की सर्वनामसंज्ञा होती है।

अव्यय संज्ञा

स्वरादिनिपातमव्ययम्

सूत्रार्थ- स्वरादिगण में पठित शब्दों की तथा निपात शब्दों की अव्यय संज्ञा होती है।

उदाहरण- स्वरादि- स्वर, प्रातर् इत्यादि
निपात - च, वा, ह इत्यादि

- क्त्वा, ल्यप्, तुमुन् प्रत्ययान्त पद भी अव्ययसंज्ञक होते हैं- यथा- पठित्वा, प्रपठय, पठितुम् आदि।

- कुछ तद्धित प्रत्ययान्त शब्दों की भी अव्ययसंज्ञा होती है।

जैसे- ततः, तत्र, तदा, विना आदि।

- अव्ययीभाव समास की अव्ययसंज्ञा होती है।

जैसे- अधिहरि, अध्यात्मम्, उपगनम्, यथाशक्ति आदि।

पद संज्ञा

सुप्तिङन्तं पदम्

व्याख्या-

(i) प्रातिपदिकों में प्रथमा से सप्तमी तक सु औ जस् आदि सुप् विभक्तियाँ लगाकर जो रामः, रामौ, रामाः आदि शब्दरूप बनते हैं, वे सुबन्त पद कहलाते हैं।

(ii) धातुओं से विभिन्न लकारों में तिप् तस् झि तथा त आत्ताम् झ आदि 18 तिङ् प्रत्यय लगाकर जो पठति पठतः पठन्ति आदि धातुरूप बनते हैं, वे तिङन्त पद कहलाते हैं।

नोट- पद दो प्रकार के होते हैं-

7 विभक्ति X 3 वचन = 21

(i) सुबन्त पद (शब्दरूप) रामः, हरिः, गुरुः आदि।

(ii) तिङन्त पद (धातुरूप) पठति, लभते, जानाति आदि।

परस्मैपदी (9) आत्मनेपदी (9)

लट् अ
लिट् इ
लुट् उ
लृट् ऋ
लेट् ए
लोट् ओ

लङ् अ
लिङ् इ
लुङ् उ
लृङ् ऋ

तिङ् प्रत्यय- दसों लकारों के प्रत्ययों को तिङ्ङ्त्यय कहा जाता है। ये दो प्रकार के हैं- परस्मैपदी और आत्मनेपदी।

परस्मैपदी तिङ् प्रत्यय- (१)

प्रथम पुरुष	तिप्	तस्	झि
मध्यम पुरुष	सिप्	थस्	थ
उत्तम पुरुष	मिप्	वस्	मस्

आत्मनेपदी तिङ् प्रत्यय- (१)

प्रथम पुरुष	त	आताम्	झ
मध्यम पुरुष	थास्	आथाम्	ध्वम्
उत्तम पुरुष	इट्	वहि	महिङ्

- इस प्रकार ये 18 प्रत्यय तिङ् कहलाते हैं। तिप् के 'ति' से लेकर महिङ् के 'ङ' तक 'तिङ्' कहा गया।

सुप् प्रत्यय- सुप् प्रत्यय प्रातिपदिक से जुड़कर पद बनाते हैं। जैसे- 'राम' प्रातिपदिक से 'सु' लगेगा तो 'रामः' यह पद बनेगा।

> सुप् प्रत्यय 21 होते हैं।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रयमा	सु	औ	जस्
द्वितीया	अम्	औट्	शस्
तृतीया	टा	भ्याम्	भिस्
चतुर्थी	ङे	भ्याम्	भ्यस्
पञ्चमी	ङसि	भ्याम्	भ्यस्
षष्ठी	ङस्	ओस्	आम्
सप्तमी	ङि	ओस्	सुप्

अर्थवत् + धातुः + अप्रत्ययः

प्रातिपदिक संज्ञा

अर्थवदधातुरप्रत्ययः प्रातिपदिकम्

सूत्रार्थ धातुरहित, प्रत्ययान्तरहित सार्थक शब्दस्वरूप की प्रातिपदिक संज्ञा होती है।

उदाहरण- राम, कृष्ण, लता आदि।

राम

स्थानी
निर्भित्न
आदेश
आगम

स्थानी ← राकेश मुकेश

शत्रुवद् आदेशः प्रति + एक = प्रत्येक

मित्रवद् आगमः य टीना

परि + छेद = परिच्छेद आदेश

सांधी

रविवार सुबह 9 बजे